देवी दुर्गा,

शक्ति व संरक्षण की दात्री

फाल्गुनी फ़्रीमॅन द्वारा लिखित

देवी दुर्गा का भव्य स्वरूप—प्रशान्त तथापि भयंकर—अन्दर व बाहर विद्यमान परमशक्ति का मूर्तरूप है। जिस प्रकार एक पर्वत से नीचे की ओर बहता हुआ जल, प्रबल वेग से बहती एक नदी, एक उपनदी या सौम्य, शीतल जलधारा का रूप ले सकता है, उसी प्रकार महादेवी भी स्वयं को अनेक रूपों में प्रकट करती हैं, परन्तु सभी रूपों का मूल तत्त्व एक ही होता है। जब ब्रह्माण्डीय सन्तुलन अस्तव्यस्त होने लगता है, जब धर्म की हानि होती है तब भगवती सगुण रूप धारण कर देवी दुर्गा के रूप में अवतरित होती हैं। इस रूप में, देवी शक्ति व संरक्षण की दात्री हैं। देवी दुर्गा की इच्छाशक्ति प्रबल है; वे दृढ़संकल्प, करुणा व धर्म की आदर्श हैं।

'मार्कण्डेय पुराण' में, एक सुन्दर स्तोत्र है जिसे 'देवीमाहात्म्य' या 'दुर्गा सप्तशती' [माँ दुर्गा की स्तुति में सात सौ श्लोक] के नाम से जाना जाता है। इस स्तोत्र में दानव महिषासुर के साथ देवी दुर्गा के संग्राम व असुर के संहार की गाथा के रूप में देवी की महिमा का स्तुतिगान किया गया है।

इस प्रसंग का आरम्भ तब होता है जब दीर्घकाल की तपस्या के बाद महिषासुर, ब्रह्मदेव से वरदान प्राप्त करता है। वह अमरत्व का वरदान माँगता है और ब्रह्मदेव से प्रार्थना करता है कि कोई भी पुरुष, पशु या देवता उसका वध न कर सके और वह केवल एक स्त्री द्वारा ही परास्त हो। चूँकि महिषासुर स्त्रियों को सबल नहीं मानता था, इसलिए उसने सोचा कि ऐसा वरदान माँगकर वह अपना अमरत्व सुनिश्चित कर रहा है।

यह वरदान पाने के उपरान्त लोभ, दम्भ और स्वार्थ से ग्रस्त महिषासुर समस्त लोकों में उपद्रव मचाने लगा। सब ओर हाहाकार मच गया, विश्व की शान्ति भंग होने लगी और समस्त ब्रह्माण्ड का संचालन अस्तव्यस्त हो गया।

सभी देवों ने रक्षा के लिए भगवान विष्णु व भगवान शिव से प्रार्थना की। ऐसा कहा जाता है कि जब सभी देवता प्रार्थना करने के लिए एकत्र हुए तब उन सबके अन्दर से देदीप्यमान प्रकाश रूपी तेजस् प्रकट हुआ। बाहर प्रसरित होता उन सभी का यह तेज एकाकार होकर एक प्रकाशपुंज का मण्डल बन गया जिसमें से परम ओजस्वी, परम बलशालिनी और भयंकरी देवी दुर्गा का प्राकट्य हुआ। उनका प्राकट्य धर्म, नैतिकता व सदाचार का संरक्षण करने हेतु एक योद्धा देवी के रूप में हुआ

जिससे वे लोभ, दम्भ, स्वार्थ, बाधाओं, दुविधाओं, ईर्ष्या व प्रमाद जैसे राक्षसों का संहार कर मानवता का उत्थान करें।

कहा जाता है कि जब देवी दुर्गा सभी देवों द्वारा भेंट किए गए अस्त्र-शस्त्रों व रत्न-आभूषणों से सुसज्जित हुईं, तब उनके तेजस्वी व भयंकर रूप को देखकर समस्त ब्रह्माण्ड काँप उठा। यह देखकर व सुनकर, अहंकारी महिषासुर प्रहार करने के लिए उनकी ओर बढ़ा और उन दोनों के बीच एक भीषण संग्राम छिड़ गया। 'देवीमाहात्म्य' में दिए गए वर्णन में यह बताया गया है कि : "देवी के एक क़दम से धरती काँप उठी, उनका मुकुट आकाश को भेदने लगा, उनके धनुष की प्रत्यंचा की एक टंकार से पाताल लोक डगमगा गया और फिर आरम्भ हुआ देवी और देव-शत्रुओं का संग्राम।"[१] नौ दिन व नौ रातों के इस युद्ध में देवी दुर्गा ने महिषासुर के साथ घोर संग्राम किया और दसवें दिन उस असुर को परास्त कर दिया।

विजयी देवी दुर्गा के सिंहवाहिनी, सौम्यता को प्रसरित करने वाली, अस्त्र-शस्त्रों से अलंकृत अष्टभुजा वैभवशालिनी स्वरूप को देखकर हमें अपने जीवन में उनसे असीम बल व गौरव मिलता है और देवी दुर्गा के रूप में प्रकट होने वाले इस अतुलनीय बल से हमें संरक्षण का आश्वासन भी मिलता है।

देवी दुर्गा के प्रतीक

इन योद्धा देवी दुर्गा ने अपने हाथों में जो अस्त्र-शस्त्र धारण किए हैं और उनका जो वाहन है, यह सब आध्यात्मिक पथ का अनुसरण करने वाले साधकों के लिए उन साधनों के प्रतीक हैं जिनका उपयोग हम अपने आन्तरिक शत्रुओं को पहचानने, उनका सामना करने व उनका नाश करने के लिए कर सकते हैं। यद्यपि देवी-देवताओं को भिन्न-भिन्न प्रकार से और भिन्न-भिन्न रूपों में दर्शाया जाता है, यहाँ कुछ प्रतीकात्मक रूप बताए गए हैं जिनके द्वारा देवी दुर्गा को प्राचीन छवियों में प्रायः दर्शाया जाता है।

- 'शेर,' बल, इच्छाशक्ति व दृढ़संकल्प का प्रतीक है। अपने वाहन के रूप में इस भव्य पशु पर विराजमान होना, देवी दुर्गा के इन सद्गुणों पर प्रभुत्व को दर्शाता हैं। एक साधक की इच्छाशक्ति व उसका दृढ़संकल्प, आध्यात्मिक पथ पर सतत प्रगतिशील रहने के लिए अनिवार्य हैं।
- भगवान विष्णु का 'सुदर्शन चक्र,' जिसे देवी दुर्गा ने अपने सबसे ऊपर वाले दाहिने हाथ में धारण किया है, धर्म का प्रतीक है। यह हमें स्मरण कराता है कि हमें जीवन की किसी भी

परिस्थिति में सदैव धर्म का निर्वाह करना चाहिए और जो भी चीज़ हमें धर्मसंगत कार्य करने से रोके, हमें उसका त्याग या उसका नाश करना चाहिए।

- 'तलवार,' जिसे देवी ने अपने ऊपरी-मध्य दाहिने हाथ में धारण किया है, वह बुद्धि की तीक्ष्णता की प्रतीक है और यह साधकों को प्रोत्साहित करती है कि वे अपने बुद्धिबल व विवेक का उपयोग कर अपनी नकारात्मक वृत्तियों पर विजय प्राप्त करें।
- 'गदा,' जिसे देवी दुर्गा ने अपने निचले-मध्य दाहिने हाथ में धारण किया है, वह ज्ञान की शक्ति की प्रतीक है। जो साधक ज्ञान की शक्ति का उपयोग करते हैं, वे हर चीज़ को स्पष्टता से समझकर, उसका पुष्टिकरण कर और उसकी प्रामाणिकता या सत्यता को जानकर माया को नष्ट कर पाते हैं।
- 'अभय मुद्रा,' जो देवी के सबसे निचले दाहिने हाथ की मुद्रा है, उससे वे आशीर्वाद, अनुकम्पा और सतत संरक्षण प्रदान करती हैं।
- 'शंख,' जिसे देवी दुर्गा ने अपने सबसे ऊपर के बायें हाथ में धारण किया है, वह अशुद्ध व अशुभ चीज़ों के नाश का प्रतीक है। शंखनाद, आदिनाद 'ॐ' है जिससे इस समस्त ब्रह्माण्ड का सृजन हुआ है और जिसकी गूँज उसका श्रवण करने वाले को प्रशान्ति व शमस्थिति से भर देती है।
- 'त्रिशूल,' जिसे देवी ने अपने ऊपरी-मध्य बायें हाथ में धारण किया है व जिसे भगवान शिव ने उन्हें प्रदान किया था, उन तीनों गुणों से ऊपर उठने को दर्शाता है जो मानव में अन्तर्जात हैं। ये गुण हैं : तमस् [प्रमाद, जड़ता व अज्ञान], रजस् [क्रियाशीलता व आवेश] और सत्त्व [शुद्धता, प्रकाश, सामंजस्य व बुद्धिमत्ता।] जिस प्रकार त्रिशूल हर उस चीज़ को भेदता व उसका नाश करता है जो उसके सामने आती है, वैसे ही माँ दुर्गा की कृपा व उनकी करुणा से मानव को वह प्रज्ञान प्राप्त होता है जिससे वह इन तीनों गुणों पर विजय प्राप्त कर सीमितताओं से परे जा सके।
- 'धनुष,' जिसे देवी दुर्गा ने अपने निचले-मध्य बायें हाथ में धारण किया है, वह शक्ति का प्रतीक है। कभी-कभी देवी दुर्गा को इस हाथ में धनुष और बाण, दोनों को धारण किए हुए दर्शाया जाता है जो अन्तर्निहित सामर्थ्य शक्ति व सक्रिय शक्ति, दोनों ऊर्जाओं के ऊपर उनके नियन्त्रण को दर्शाता है। साधक होने के नाते हम अपनी अन्तर्निहित ऊर्जा को विकसित करने

के प्रति जागरूक रह सकते हैं और यथासम्भव सर्वश्रेष्ठ परिणाम पाने के लिए उस ऊर्जा को उपयोग में ला सकते हैं।

- 'कमल' का पुष्प, जिसे देवी ने सबसे निचले बायें हाथ में धारण किया है, वह अनासक्ति का प्रतीक है। यह सुन्दर पुष्प कीचड़ में उगता है फिर भी वह उससे ऊपर उठकर, सतह पर अपनी प्राकृतिक सुन्दरता में अवस्थित रहता है। इसी तरह, हम भले ही इस संसार में जन्म लेते हैं और इसमें रहते हैं, फिर भी ऐसा करते हुए हम अनासक्त भाव से इसके दूषित या विकारयुक्त बन्धनों से ऊपर उठ सकते हैं।

देवी दुर्गा का नाम भी हमें उनके गुणों के बारे में बहुत कुछ बताता है। दुर्गा का अर्थ है 'अजेय,' 'अगम्य' या 'दुर्गम' व 'अभेद्य।' इस शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के मूल 'दुर्ग' से होती है, जिसका अर्थ है 'क़िला' या 'वह जिसे पराजित करना कठिन हो।' देवी दुर्गा के रूप में देवी का सम्मान करने के लिए पारम्परिक तौर पर और भी कई नामों का उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, देवीमाहात्म्य में देवी दुर्गा की स्तुति में उनके १०८ नामों की माला गाई गई है। इन नामों का जप करने से साधक अपने अन्दर इन गुणों का आवाहन करता है व उन्हें जाग्रत करता है।

कुछ नाम जिनसे देवी दुर्गा का स्तुतिगान किया जाता है, वे हैं 'बुद्धि'; 'महिषासुरमर्दिनी' यानि अहंकारी व स्वार्थी महिषासुर का संहार करने वाली; 'शैलपुत्री', क्रिया व शौर्य की समर्थक; 'बुद्धिदा' यानि ज्ञान देने वाली; व 'सिद्धिदात्री,' प्रकृति के सौन्दर्य की मूर्तरूप।

देवी दुर्गा की आराधना

भारत में देवी दुर्गा की आराधना माँ के रूप में की जाती है, वे जो रक्षा करती हैं, वे जो धर्म को बनाए रखती हैं। जब लोगों के सामने आपदा या संकट आता है तो वे 'दुर्गा सप्तशती' के सात सौ श्लोकों का पाठ करने के लिए समय निकालते हैं। देवी दुर्गा के भक्तों में यह दृढ़ आस्था है कि देवी दुर्गा उनकी रक्षा करेंगी।

साथ ही, भारत में नौ दिन और नौ रातों का नवरात्रि का त्यौहार देवी की पूजा-अर्चना के लिए समर्पित है। यह त्यौहार, दैत्य महिषासुर के साथ हुए देवी दुर्गा के नौ दिन लम्बे संग्राम का स्मरणोत्सव है और इसकी पूर्णाहुति दशहरा या विजयदशमी के दिन होती है जो देवी की विजय का प्रतीक है। पंचांग के अनुसार नवरात्रि अश्विन माह में आती है, ग्रेगोरियन कैलेन्डर के अनुसार यह सितम्बर व अक्टूबर माह के दौरान और सुन्दर शरद ऋतु में होती है—वह ऋतु जब मानसून की वर्षा से धरती शीतल हो चुकी होती है और भारत उल्लासमय हो उठता है। देवी दुर्गा की प्रतिमाएँ बनाई

जाती हैं और उन्हें सुसज्जित किया जाता है और लोग संगीत व नृत्य द्वारा देवी का सम्मान करने के लिए एकत्र होते हैं। ढोल-नगाड़ों की आवाज़ें शहरों-नगरों में गूँजती हैं। मनोरम कलाकारी से खूबसूरत रंगोलियाँ बनाई जाती हैं और धूप-अगरबत्तियों, फूलों व ताज़ी मिठाइयों की खुशबू से गलियाँ महक उठती हैं। शहरों को रंगबिरंगी झण्डियों, आम के पत्तों व चमेली, गेंदा और रजनीगन्धा जैसे खुशबूदार फूलों से सजाया जाता है। लोग देवी के प्रति दिल खोलकर दक्षिणा अर्पित करते हैं।

वायु भी देवी के प्रति प्रेम, भक्ति और श्रद्धा की भावना से सराबोर होती है। लोग उत्तर भारत में स्थित, वैष्णो देवी जैसे तीर्थ की यात्रा करते हुए मार्ग में "जय माता दी," का जयकारा लगाते जाते हैं। भारत के उत्तरी व पूर्वी भागों में "दुर्गा देवी की जय!" की आवाज़ें गलियों में गूँजती हैं। भारत अत्यधिक विविधतापूर्ण देश है और हर प्रदेश में देवी की आराधना करने के तरीक़े अलग-अलग हैं। फिर भी पूरे देश में नवरात्रि का त्यौहार मनाने का उद्देश्य एक ही है : देवी की उपस्थिति का आवाहन करना और अधर्म पर धर्म की विजय का उत्सव मनाना। ये त्यौहार उत्सव मनाते हैं, जीवन का, सौन्दर्य का, अच्छाई का और नौ दिन व नौ रातों तक देवी के अखण्ड स्मरण का।

वर्षों से श्री मुक्तानन्द आश्रम और गुरुदेव सिद्धपीठ में नवरात्रि के दौरान, देवी लक्ष्मी और देवी सरस्वती के साथ देवी दुर्गा की पूजा कर व उन्हें चढ़ावा अर्पित कर उनकी आराधना की जाती रही है। भारत स्थित सिद्धयोग आश्रम, गुरुदेव सिद्धपीठ में अजान वृक्ष के निकट देवी दुर्गा की एक शानदार व विशाल प्रतिमा है; अजान वृक्ष के बारे में ऐसी मान्यता है कि यह केवल सन्तों की भूमि पर ही उगता है। देवी दुर्गा के मन्दिर के पथ के दोनों ओर नारियल के पेड़ हैं और इस मन्दिर के चारों ओर प्रकृति अपने पूरे वैभव में दिखाई देती है। प्रकृति के परिवेश में देवी दुर्गा का देदीप्यमान स्वरूप इस बात की याद दिलाता है कि देवी दुर्गा उस ब्रह्माण्डीय शक्ति की अभिव्यक्ति हैं जो हर पेड़, हर पौधे, सम्पूर्ण पृथ्वी तथा इस ब्रह्माण्ड के कण-कण में व्याप्त हैं।

नवरात्रि के दौरान देवी दुर्गा को लाल या हरे वस्त्रों से सुशोभित किया जाता है और आभूषणों व पुष्प-मालाओं से सजाया जाता है। गेंदे के नारंगी फूलों और आम के पत्तों से बने तोरण पूजा-वेदी पर लगाए जाते हैं। सुबह-शाम अत्यन्त भक्तिभाव से उनकी पूजा की जाती है।

जब हम प्रेम व भक्ति से देवी दुर्गा की आराधना करते हैं, जब हम उनके सद्गुणों जैसे शक्ति, शान्ति, अटूट विश्वास और अदम्य इच्छाशक्ति को अपने अन्दर पहचानते हैं और उनका विकास करते हैं तो हम किसी भी परिस्थिति में धर्म का निर्वहन करने के लिए अधिक सक्षम हो जाते हैं।

जब हम देवी दुर्गा का स्मरण व आवाहन करते करते हैं तो वे हमारे हृदय व मन में प्रकट होती हैं, वे हमारे जीवन में प्रकट होती हैं, वे उस रूपान्तरण में प्रकट होती हैं जो हम अपने अन्दर लाना चाहते हैं और वे उस मुक्ति में प्रकट होती हैं जिसकी हममें ललक है। ऐसी प्रार्थना है कि हम धर्म की धारिणी, तारिणी और अखण्ड रूप से सुरक्षा की प्रदायिनी के रूप में देवी दुर्गा के गुणों का अनुभव करें— शक्तिदात्री दुर्गा अपनी सौम्य दृष्टि हम पर सदा बनाए रखें।

जय माता दी! धर्म की विजय! दुर्गा देवी की जय!

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] अंग्रेज़ी भाषान्तर © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®।